ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे — निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 28 अंकः 31 बुलेटिन अवधिः : 17–21 अप्रैल, 2019 दिनः मंगलवार दिनाँकः 16 अप्रैल, 2019

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	17/04/2019	18/04/2019	19/04/2019	20/04/2019	21/04/2019
वर्षा (मिमी0)	5	15	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	30	29	31	33	34
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	18	16	15	16	17
बादल आच्छादन	घने बादल	घने बादल	आंशिक बादल	साफ	साफ
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	95	95	90	80	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	55	55	50	40	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	012	012	008	008	008
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	पूर्व–दक्षिण–पूर्व	उत्तर–पूर्व	उत्तर–पश्चिम	उत्तर–पश्चिम

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (9–15 अप्रैल, 2019) में आसमान साफ रहने के साथ कही–कही मध्यम बादल छाये रहे तथा मौसम साफ रहा, अधिकतम तापमान 32.0 से 39.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 10.9 से 20.9 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 65 से 80 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 19 से 46 प्रतिशत एवं मुख्यतः पूर्व–दक्षिण–पूर्व एवं पूर्व–उत्तर–पूर्व दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

<u>कृषि मौसम परामर्श</u>

<u>फसल</u>	<u>अवस्था</u>	कृषि मौसम सलाह समिति द्वारा किसानो हेतु कृषि सलाह
गेहूं	कटाई	वर्षा को ध्यान मे रखते हुए गेहूँ एवं जौ की कटाई करें। कटाई के उपरांत फसल को 3–4 दिनों तक धूप में सुखाकर थ्रैसर से मढ़ाई करें। गेहूँ की कटाई अगर कम्बाइन द्वारा की जानी हो तो दानों में नमी 20 प्रतिशत से अधिक न हो। अधिक नमी होने पर दाने बालियों में फसे रह जाते हैं।
दलहनी फसलों	कटाई	दलहनी फसलों जैसे मटर, मसूर तथा चना की कटाई फसल पकने के तुरंत बाद सुबह के समय करें अन्यथा दाने झड़ने से नुकसान होता है। भण्डारण से पूर्व दानों को अच्छी तरह से सुखा लें।
ढ़ैचा, सनई	बुवाई	गेहू की कटाई के बाद हरी खाद हेतु मुख्यतः ढ़ैचा एवं सनई की बुवाई अप्रैल के द्वितीय पखवाड़े मे करें तथा बीज दर 50–60 किलोग्राम/है0 रखें।
चारा फसलें	बुवाई	अप्रैल माह में पशुओं हेतु हरे चारे की कमी के समाधान हेतु इस समय बहु कटाई वाली ज्वार, लोबिया, मक्का, बाजरा आदि फसलों को चारे हेतु बुवाई करें। भरपूर उत्पादन हेतु ज्वार की बुवाई अप्रैल के दूसरे सप्ताह तथा बाजरा एवं लोबिया की बुवाई अप्रैल के अंत तक अवश्य पूरा कर लें।
गन्ना	–	अगर गेहूँ की कटाई के बाद विलम्ब से गन्ना की बुवाई करनी हो तो इसे अप्रैल माह में पूरा कर लें। बुवाई हेतु गन्ना के 1/3 से 1/2 ऊपरी हिस्सों को बीज में प्रयोग करें। बीजोपचार से पूर्व बीज को 24 घंटे पानी में भिगोंए। इससे जमाव में आशातील बढ़ोत्तरी होती है। बीज शोधन होतु 1 ग्राम कार्बेडाजिम 50 प्रतिशत को एक लीटर पानी की दर से घोल बनाए। विलम्ब से बुवाई में को एस 88230, को एस 95255, को एस 95222, को एस97264, को पंत 84212 आदि प्रजातियों का चुनाव करें।
मटर	कटाई	मटर की पकी हुई फसल की कटाई करे व पौधो को 1–2 दिन तक खेत में सूखने दे।
हल्दी, अदरक, अरबी	बुवाई	हल्दी, अदरक एवं अरबी की बुवाई करे।
आम	–	जब आम का फल मटर के दाने के बराबर हो जाय तो सिंचाई शुरू कर देनी चाहिए। गुम्मा रोग से ग्रस्त बौर को तोड़कर निकाल देना चाहिए। थाले बनाकर 10–15 दिनों के अन्तराल पर दो–तीन सिंचाई करनी चाहिए। फलों को गिरने से रोकने के लिए 20 पी0पी0एम0, एन0ए0ए0 (0.02 ग्राम /लीटर) का छिड़काव करना चाहिए।
पशुपालन	–	इस गर्मी के दिनों में पशुओं के लिए पानी की उचित व्यवस्था करें। पीने के पात्र को साफ रखना चाहिए और दिन के समय पशुओ को कम से कम चार बार पानी जरूय पिलाये। पटेरा रोग से बचाव हेतु प्रसव होने के 10 दिन पश्चात् 10–15सी0सी0 नीम का तेल नवजात को पिला दें। तदुपरांत 10 दिन पश्चात् पुनः 10–15 सी0सी0 नीम का तेल पिला दें। बथुए का तेल इसका रामबाण इलाज है।

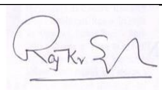

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर